लिंगराज मंदिर

drishtiias.com/hindi/printpdf/lingaraj-temple

प्रिलिम्स के लिये:

देउल शैली, लिंगराज मंदिर, गंग शासक, सोम वंश

मेन्स के लिये:

भारत में मंदिर स्थापत्य कला , उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के मंदिरों की स्थापत्य कला में अंतर्

चर्चा में क्यों?

हाल ही में ओडिशा सरकार द्वारा **11 वीं शताब्दी के लिंगराज मंदिर** (Lingaraj Temple) को उसकी 350 वर्ष पूर्व वाली संरचनात्मक स्थिति प्रदान करने की घोषणा की गई है।

प्रमुख बिंदु:

- लिंगराज मंदिर, **शिव को समर्पित** एक मंदिर है जो **ओडिशा के भुवनेश्वर** ज़िले में स्थित **सबसे पुराने मंदिरों** में से एक है।
- यह मंदिर **कलिंग वास्तुकला** की सर्वोत्कृष्टता का दर्शाता है एवं भुवनेश्वर में स्थापत्य परंपरा के **मध्यकालीन चरणों** की पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है।
- भुवनेश्वर को **एकाम्रक्षेत्र** (Ekamra Kshetra) कहा जाता है क्योंकि **13 वीं शताब्दी** के संस्कृत ग्रंथ के अनुसार लिंगराज का देवता मूल रूप से एक **आम के वृक्ष (एकाम्र)**से संबंधित था।
- माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण **सोमवंशी राजवंश** (Somavamsi Dynasty) के राजाओं द्वारा किया गया था, जिसमे आगे चलकर **गंग शासकों** (Ganga rulers) द्वारा और निर्माण कार्य कराया गया।
- इस मंदिर में **विष्णु की मूर्तियाँ स्थापित** हैं जो संभवत: गंग शासकों के समय **जगन्नाथ संप्रदाय** के विकास क्रम को इंगित करती हैं, जिन्होंने 12 वीं शताब्दी में पुरी में **जगन्नाथ मंदिर** का निर्माण कराया था।

लिंगराज मंदिर की वास्तुकला:

इस मंदिर का निर्माण **देउल शैली** (Deula Style) में किया गया है, जिसमें चार घटक शामिल हैं-

- **विमान-** गर्भगृह युक्त संरचना, (Vimana- Structure Containing the Sanctum)
- **जगमोहन-** असेंबली हॉल, (Jagamohana (Assembly Hall)
- **नटामंडीरा-**फेस्टिवल हॉल (Natamandira- Estival Hall)
- **भोग-**मंडप-प्रसाद का हॉल (Bhoga-Mandapa- Hall of Offerings)

स्रोत: द हिंदू